PAPER NAME

Social-Cultural Environmental Polution - Dr. Neelam (1).pdf

WORD COUNT	CHARACTER COUNT
6979 Words	14531 Characters
PAGE COUNT	FILE SIZE
15 Pages	626.7KB
SUBMISSION DATE	REPORT DATE
May 4, 2026 1:18 PM GMT+5:30	May 4, 2026 1:19 PM GMT+5:30

0% Overall Similarity

This submission did not match any of the content we compared it against.

- 0% Internet database
- 0% Publications database
- Crossref database
- Crossref Posted Content database
- 0% Submitted Works database

Excluded from Similarity Report

- Bibliographic material
- Quoted material
- Cited material
- Small Matches (Less then 14 words)

सामाजिक-सांस्कृतिक प्रदूषण : कारण, प्रभाव एवं निवारण

डॉ. नीलम

सहायक आचार्य, काशी नरेश राजकीय स्नातकोत्तर महाविद्यालय, ज्ञानपुर, भदोही, उत्तर प्रदेश

सारांश

अधिकतर वैश्विक विमर्श भौतिक प्रदूषण पर केंद्रित होता है, जिसका संबंध वायु, जल एवं मृदा से है। समाज और संस्कृति में व्याप्त प्रदूषण, विमर्श से बाहर रह जाते हैं। अंधविश्वास, अशिक्षा, अश्लीलता, नशाखोरी, अनैतिक व्यवहार, मानवीय एवं संवैधानिक मूल्यों का ह्रास आदि सामाजिक-सांस्कृतिक प्रदूषण हैं। यह शोध पत्र सामाजिक-सांस्कृतिक प्रदूषण के कारणों की पहचान करता है एवं उनके प्रभाव को विश्लेषित करता है। शोध पत्र में एक स्वस्थ सामाजिक-सांस्कृतिक पर्यावरण के निर्माण हेतु सामाजिक-सांस्कृतिक प्रदूषणों के निवारण के व्यावहारिक उपायों को सम्मिलित किया गया है।

प्रमुख संप्रत्यय : *सामाजिक-सांस्कृतिक पर्यावरण, सामाजिक-सांस्कृतिक प्रदूषण, सामाजिक-सांस्कृतिक प्रदूषक, स्वस्थ पर्यावरण, मूल्य, संस्कृति, विश्वास*

भूमिका :

यह संसार द्रव्यमान एवं ऊर्जा के स्वतंत्र रूप तथा आपस में अंत:क्रिया के परिमाणस्वरूप निर्मित हुआ है तथा संचालित हो रहा है। धरती पर निवास करने वाले मानव जाति के सदस्य के रूप में व्यक्ति के कार्य एवं व्यवहार को उसका प्राकृतिक पर्यावरण तथा सामाजिक-सांस्कृतिक पर्यावरण प्रभावित करता है। प्रत्येक व्यक्ति की मनोवैज्ञानिक दशाएं अलग-अलग होती हैं किन्तु कुछ व्यक्तियों में थोड़ी समानता होती है। यह समानता व्यक्तियों को जोड़ने एवं अंत:क्रिया करने के लिए प्रेरित करता है। व्यक्तियों की अंत:क्रिया से समाज बनता है। समाज में प्रत्येक व्यक्ति की पहचान उसका भौतिक शरीर एवं उसकी संस्कृति होती है। व्यक्ति के जन्म के पूर्व एवं जन्म के बाद आस-पास के सभी भौतिक घटक उसके भौतिक शरीर को प्रभावित करते हैं। साथ ही वह अपने आस-पास के भौतिक घटकों को प्रभावित करता है। मानव समाज के सदस्य के रूप में वह जुड़ता है और समाज की संस्कृति से संस्कारित होता है। वह जिन सामाजिक-सांस्कृतिक विरासत के वाहकों के बीच पलता है, उनकी सामाजिकता एवं संस्कृति का अनुकरण करता है। अनुकरण के दौरान वह सामाजिक-सांस्कृतिक

गुणों एवं संकुलों से जुड़ता है तथा सामाजिक-सांस्कृतिक पर्यावरण का अंग हो जाता है। आरंभ में वह सामाजिक-सांस्कृतिक पर्यावरण में समायोजित होता है किन्तु बाद में वह उसमें बदलाव भी लाता है। स्वस्थ सामाजिक-सांस्कृतिक गुणों एवं संकुलों का अनुकरण करके वह स्वस्थ सामाजिक-सांस्कृतिक पर्यावरण को बनाए रखने में योगदान करता है इसके विपरीत अस्वस्थ सामाजिक-सांस्कृतिक गुणों एवं संकुलों का अनुसरण करके वह अस्वस्थ सामाजिक-सांस्कृतिक पर्यावरण को बनाए रखता है जो वैश्विक समाज के हित में नहीं होता है। इन अस्वस्थ सामाजिक-सांस्कृतिक गुणों एवं संकुलों को सामाजिक-सांस्कृतिक पर्यावरण का प्रदूषक कहा जाता है। इन प्रदूषकों से समाज में अवांछित क्रियाकलाप होते हैं। इन क्रियाकलापों के माध्यम से जो अव्यवस्था उत्पन्न होती है वह सामाजिक-सांस्कृतिक प्रदूषण की श्रेणी में आता है। सामाजिक-सांस्कृतिक प्रदूषक वे गैर तकनीकी एवं मानवीय कारक हैं जो समाज की मान्यताओं, मूल्यों, जीवनशैली और व्यवहार के माध्यम से सामाजिक-सांस्कृतिक पर्यावरण को प्रदूषित करते हैं। सामाजिक-सांस्कृतिक पर्यावरण को वैश्विक समाज के अनुकूल बनाना प्रत्येक व्यक्ति की जिम्मेदारी है। सामाजिक-सांस्कृतिक प्रदूषण से सामाजिक अव्यवस्था और सांस्कृतिक ह्रास होता है। यहीं सामाजिक अव्यवस्था और सांस्कृतिक ह्रास आगे चलकर समाज के सामने गंभीर खतरा बन जाता है। वर्तमान में ऐसे कई खतरे हैं जिनका सामना मानव समाज कर रहा है। सामाजिक-सांस्कृतिक प्रदूषण का निवारण आज की अनिवार्य आवश्यकता है। इसलिए सामाजिक-सांस्कृतिक प्रदूषण के कारण, प्रभाव एवं निवारण को विषय के रूप में सम्मिलित किया गया है। सामाजिक-सांस्कृतिक प्रदूषण की पहचान करना, उनके उत्पन्न होने या बने रहने के कारणों को चिह्नित करना, समाज पर पड़ने वाले उनके प्रभाव को विश्लेषित करना एवं सामाजिक-सांस्कृतिक प्रदूषण के निवारण के लिए प्रदूषकों को दूर करने हेतु एक रूपरेखा प्रस्तुत करना, इस शोध पत्र के उद्देश्य हैं।

सामाजिक-सांस्कृतिक पर्यावरण

पर्यावरण को व्यक्ति के वातावरणजनित आंतरिक एवं बाहरी परिस्थितियों तथा प्रभावों के कुल योग के रूप में देखा जा सकता है, जो व्यक्ति के जीवन और विकास को प्रभावित करता है। पर्यावरण के घटकों को प्राकृतिक एवं सामाजिक-सांस्कृतिक दो भागों में विभक्त किया जा सकता है। पर्यावरण का प्राकृतिक घटक प्रकृति जन्य तथा सामाजिक-सांस्कृतिक घटक मानव निर्मित है।

सामाजिक-सांस्कृतिक पर्यावरण में वे सामाजिक और सांस्कृतिक कारक शामिल होते हैं जो किसी व्यक्ति या समाज के व्यवहार, विश्वास, मूल्य और अंतःक्रियाओं को प्रभावित करते हैं, तथा उनके अनुभवों और परिणामों को आकार देते हैं। वास्तव में यह विश्वासों, मूल्यों, मानदंडों, रीति-रिवाजों एवं परंपराओं की साझी विरासत है। यह समाज, व्यक्ति एवं संस्था के व्यवहार को, उनके विकास एवं ह्रास को, उनके निर्णयों को स्वस्थ या अस्वस्थ तरीके से प्रभावित करता है। इसके अंतर्गत सामाजिक मानदंड, भाषा, नैतिकता, धर्म, रीति-रिवाज, सामाजिक-अर्थशास्त्र, सामाजिक नियम, परम्पराएं, सौंदर्यशास्त्र, राष्ट्रवाद, मूल्य, वर्ग संरचना, अभिवृत्ति, अपेक्षाएँ, सामाजिक संगठन, सामाजिक संस्थाएं, विश्वास, व्यवहार के स्वीकृत पैटर्न, रीति-रिवाज एवं भौतिक संस्कृति आती हैं।

सामाजिक-सांस्कृतिक प्रदूषण के कारण

सामाजिक-सांस्कृतिक पर्यावरणीय प्रदूषण का कारण मानवीय गतिविधियां और अनियोजित विकास है जिससे सामाजिक-सांस्कृतिक मूल्यों का ह्रास हुआ है। मूल्यों के ह्रास के कारण सामाजिक अव्यवस्था आई और सांस्कृतिक पतन हुआ। मूल्य ह्रास हमारे चिंतन को प्रभावित कर रहा है। इसके कारण सामाजिक चेतना में स्वार्थ एवं वर्चस्ववादी तत्त्व सम्मिलित हो गए हैं जो ज्ञान आधारित समतामूलक समाज निर्माण में बाधा बन रहे हैं। हम प्रदूषण रूपी स्वार्थ एवं वर्चस्ववादी तत्त्व रोकने तथा ज्ञान आधारित समतावादी मूल्यों को प्रतिस्थापित या संवर्धित करने में पूर्णरूप से सफल नहीं रहे हैं। इसलिए सामाजिक-सांस्कृतिक प्रदूषण व्यक्ति एवं समाज दोनों को अवनति की ओर ले जा रहा है।

वे विश्वास जो हमारे विचार एवं व्यवहार को प्रभावित करते हैं उन्हें मूल्य कहलाते हैं। तार्किकता एवं सृजनात्मकता के अभाव में विश्वास का स्थान आस्था एवं अंधविश्वास ले लेता है। जब हमारा विचार एवं व्यवहार आस्था एवं अंधविश्वास से संचालित होने लगता है तब सामाजिक-सांस्कृतिक पर्यावरण दूषित होने लगता है। तार्किकता के अभाव में पारंपरिक मूल्यों और रीति-रिवाजों का ह्रास होता है। इससे सामाजिक एकता और सांस्कृतिक विविधता के लिए खतरा उत्पन्न हुआ है। इसीलिए राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 में विश्वास के संवर्धन के लिए अवधारणात्मक समझ के साथ तार्किकता एवं सृजनात्मकता को पोषित करने पर जोर दिया गया है। मूल्य ह्रास के साथ-साथ मीडिया और सोशल मीडिया ने आस्था, अंधविश्वास, अशिक्षा

से जुड़े पूर्वाग्रहयुक्त विषयवस्तु को प्रचारित-प्रसारित कर सामाजिक-सांस्कृतिक प्रदूषण को बढ़ा रहा है। सभी नागरिकों को गुणवत्तापूर्ण शिक्षा उपलब्ध नहीं होने से अशिक्षा का बने रहना भी प्रदूषण है। पूर्वाग्रहयुक्त शैक्षिक विषयवस्तु एवं कक्षाओं में उपयोग हो रहे शिक्षणशास्त्र दोनों तार्किक एवं सृजनात्मक चिंतन के स्थान पर आस्था एवं अंधविश्वास से युक्त विषयवस्तु एवं तरीकों को पोषित कर रहे हैं। इस प्रकार शिक्षा सामाजिक-सांस्कृतिक प्रदूषण को रोकने में असमर्थ रहा है। रटने को ही शिक्षा मानना और प्राप्तांकों को शैक्षिक उपलब्धि मानना शिक्षा की गुणवत्ता को न्यूनतम स्तर पर बनाए रखा है। शिक्षा तर्क के साथ विश्वास को संवर्धित करने, उन्हें पोषित करने एवं प्रचार-प्रसार करने में महत्वपूर्ण भूमिका का निर्वहन कर सकती है। इसलिए शिक्षा को भी सामाजिक-सांस्कृतिक प्रदूषण के कारण के रूप में रखा जा सकता है।

भौतिकवाद और उपभोक्तावाद ने व्यक्ति को दिखावा करने एवं विलासिता में जकड़ा हुआ है। सामान्य व्यक्ति इसका शिकार होकर अपराध की ओर बढ़ता है। नैतिक मूल्यों को वह नजरंदाज कर देता है। गरीब व्यक्ति अपने जीवन के आधारभूत जरूरतों को पूरा करने के लिए नैतिकता को त्यागकर अपराध की ओर कदम बढ़ाता है। इस प्रकार गरीबी भी सामाजिक-सांस्कृतिक प्रदूषण का कारण है।

सभी अनैतिक व्यवहार सम्यक तर्क के अभाव में होता है। नशा व्यक्ति के तर्क की क्षमता को शून्य कर देती है। इसकी आदत व्यक्ति के व्यक्तिगत जीवन के साथ-साथ सामाजिक जीवन को मूल्यविहीन बना देता है। इसलिए नशीले पदार्थों का सेवन भी सामाजिक-सांस्कृतिक प्रदूषण का कारण है।

नैतिकता से जुड़े सामाजिक नियम हमारे व्यवहार के मानदंड होते हैं। ये मानदंड हमें उचित अनुचित का बोध कराते हैं। संविधान में निहित कानून, तर्क आधारित सामाजिक वर्जनाएं, संवैधानिक मूल्य को पोषित करने वाली परम्पराएं तथा लोक रीतियों के विरुद्ध व्यवहार सामाजिक-सांस्कृतिक प्रदूषण का कारण बनती हैं।

विज्ञापन हमारी मनोवृत्ति एवं विश्वास को मनोवैज्ञानिक रूप से प्रभावित करता है। इसका आक्रामक स्वरूप एवं अतार्किक विषयवस्तु व्यक्ति को तर्क एवं नैतिकता से दूर ले जाता है। इसलिए आक्रामक विज्ञापन भी सामाजिक-सांस्कृतिक प्रदूषण का कारण बनता है।

सामाजिक भेदभाव, सामाजिक-सांस्कृतिक प्रदूषण के कारणों में प्रमुख स्थान रखता है। यह व्यक्ति का व्यक्ति के विरुद्ध, व्यक्ति का समूह के विरुद्ध, समूह का व्यक्ति के विरुद्ध तथा समूह का समूह के विरुद्ध असमान एवं अन्यायपूर्ण व्यवहार को इंगित करता है। अन्यायपूर्ण एवं असमान व्यवहार का आधार लिंग, जाति, धर्म, रंग, शारीरिक गठन, आर्थिक स्थिति, शिक्षा एवं शारीरिक क्षमता होता है। इसकी उत्पत्ति सम्यक तर्क के अभाव में आस्था एवं अंधविश्वास से उत्पन्न पूर्वाग्रह से होता है। इससे समाज में कुरीतियों, नफरत और असमानता को बल मिलता है। इसलिए सामाजिक भेदभाव भी सामाजिक-सांस्कृतिक प्रदूषण का कारण है।

सामाजिक-सांस्कृतिक प्रदूषण के प्रभाव

सामाजिक-सांस्कृतिक प्रदूषण रूपी मूल्य ह्रास से उत्पन्न स्वार्थ एवं वर्चस्ववादी तत्वों को रोकने में हम पूर्णरूप से सफल नहीं रहे हैं। इसका प्रभाव हमें ज्ञान आधारित समतावादी मूल्यों को प्रतिस्थापित या संवर्धित करने में असफलता के रूप में दिखाई देता है। समाज पर इसके प्रभाव को निम्नलिखित क्षेत्रों में देखा जा सकता है -

1. सामाजिक-सांस्कृतिक प्रदूषण से सामूहिक शांति और विकास में बाधा आ रही है।
2. अंधविश्वास, भ्रष्टाचार, हिंसा, अपराध, लूटपाट और समाज में असुरक्षा का वातावरण पैदा हो रहे हैं।
3. नशीली दवाओं की लत, मद्यपान, दहेज प्रथा और सांप्रदायिकता सामाजिक संरचना को कमजोर कर रहे हैं।
4. सामाजिक-सांस्कृतिक प्रदूषण समाज के आधारभूत सिद्धांतों को कमजोर कर रहे हैं।
5. युवा पीढ़ी में हीन भावना और दिशाहीनता पैदा कर रहे हैं।
6. मानसिक स्वास्थ्य पर बुरा असर डाल रहे हैं।
7. आत्महत्या जैसे कदम उठाने पर मजबूर कर रहे हैं।
8. सांस्कृतिक पहचान खत्म करके राष्ट्रीय गौरव को धूमिल कर रहे हैं।
9. सामाजिक संरचना के रूप में संविधान में निहित मूल्यों के विरुद्ध कार्य हो रहे हैं।
10. सामाजिक असमानता से जुड़ी बुराइयाँ छुआ-छूत, गरीबी, बेरोजगारी, अशिक्षा, ऊँच-नीच का भाव आदि बढ़ रहे हैं।
11. हमारे पारंपरिक मूल्य एवं नैतिकता में ह्रास हो रहा है।
12. रिश्तों में कड़वाहट एवं पारिवारिक विघटन हो रहा है।

13. लोक कलाओं तथा क्षेत्रीय भाषाओं के अस्तित्व पर संकट सामाजिक-सांस्कृतिक प्रदूषण के प्रभाव हैं।
14. नवयुवकों एवं नवयुवतियों में भारतीय विरासत के प्रति सम्मान में कमी सामाजिक-सांस्कृतिक प्रदूषण के प्रभाव हैं।
15. शिक्षा एवं पाठ्यक्रम में भारतीय विरासत को वास्तविक रूप में सम्मान एवं स्थान नहीं देना सामाजिक-सांस्कृतिक प्रदूषण के प्रभाव हैं।
16. फुट डालो और राज करो को संप्रदायवाद, भाषावाद, वर्णवाद, जातिवाद, वर्गवाद, भाई-भतीजावाद के रूप में प्रश्रय देना सामाजिक-सांस्कृतिक प्रदूषण के प्रभाव हैं।
17. सामाजिक-सांस्कृतिक प्रदूषण के प्रभाव के रूप में मानसिक तनाव, चिंता और संघर्ष का बढ़ना एवं उसे नियंत्रित करने में असफल रहना जिससे लोगों को गुणवत्तापूर्ण जीवन जीने में कठिनाई हो रही है।

सामाजिक-सांस्कृतिक प्रदूषण के निवारण

सामाजिक सांस्कृतिक प्रदूषण के कारणों में हमने देखा कि मूल्यों का ह्रास ही प्रदूषण का मुख्य आधार है। मूल्य से जुड़ा नैतिकता है। नैतिकता के अभाव में मूल्य तिरोहित होने लगता है। इसलिए हमें मूल्य ह्रास को रोकने के लिए नैतिकता को अपनाना होगा एवं चरित्र का निर्माण करना होगा। मूल्य, नैतिकता एवं चरित्र के आधार हैं इसलिए सबसे पहले हम मूल्य क्या है इसे समझते हैं।

मूल्य

हमारे आदर्श या मान्यताएँ या विश्वास मूल्य हैं। मूल्य व्यक्तिगत रूप से या समूह में वांछनीयता के निर्धारण में मदद करते हैं। यह व्यवहार, प्रेरणा, धारणाओं और व्यक्तित्व को आकार देते हैं। जैसे- ईमानदारी, दया, सम्मान, न्याय, स्वतंत्रता, समानता, और शांति।

सामाजिक-सांस्कृतिक मूल्य

हमारे साझा विश्वास, मान्यताएं, परंपराएं आदर्श, नियम और मानदंड जो किसी व्यक्ति एवं समाज के व्यवहार, दृष्टिकोण, संबंध, जीवनशैली और पहचान को आकार देते हैं, सामाजिक-सांस्कृतिक मूल्य नाम दिया जाता है। प्रमुख मूल्यों में ईमानदारी, बड़ों का सम्मान, अहिंसा, मानवता, सहयोग, अतिथि सत्कार और सामुदायिक सद्भाव शामिल हैं। ये मूल्य सामाजिक स्थिरता, नैतिकता और पीढ़ी-दर-पीढ़ी विरासत को बनाए रखने के लिए आवश्यक हैं। ये साझा विश्वास हैं जो एक समूह के लोगों के सोचने और व्यवहार करने के तरीके को निर्धारित करते

हैं। ये मूल्य व्यक्तिगत व्यवहार को प्रभावित करते हैं और समाज में नियम व अनुशासन बनाए रखने में मदद करते हैं। यह नैतिकता के साथ मिलकर सही-गलत, उचित-अनुचित का निर्णय लेने में सहयोग करते हैं। सामाजिक व्यवस्था बनाए रखने में इनका विशेष योगदान होता है।

'अंतर-विषयक सिद्धांत और शोध के आधार पर कहा जा सकता है कि व्यक्तियों का सामाजिक विश्वास पर्यावरणीय सुरक्षा के लिए त्याग करने की इच्छा में परिवर्तित होता है या नहीं, यह उनके अपने सामाजिक विश्वास और विश्वास की संस्कृति दोनों पर निर्भर करता है। उच्च विश्वास की संस्कृति वाले समाजों में, उच्च सामाजिक विश्वास की रिपोर्ट करने वाले व्यक्ति पर्यावरणीय सुरक्षा का समर्थन करने के लिए काफी अधिक इच्छुक होते हैं। हालाँकि, कम सामाजिक विश्वास वाले वातावरण की संस्कृति वाले लोगों में, उच्च विश्वास और इच्छा के बीच संबंध कम हो जाता है। निष्कर्ष इस बात पर प्रकाश डालते हैं कि सामाजिक विश्वास और इच्छा के बीच एक सकारात्मक संबंध है, यह संबंध संभवतः सांस्कृतिक विश्वास पर निर्भर करता है' (जोसुआ व फेंग, 2025)।

मूल्य साझा विरासत होने के साथ-साथ प्रत्येक व्यक्ति के लिए अलग-अलग होते हैं। प्रत्येक समाज के संस्कृति के लिए भी मूल्य अलग-अलग होते हैं। किसी सामाजिक-सांस्कृतिक पर्यावरण में प्रत्येक व्यक्ति के मूल्यों में वस्तुनिष्ठ उभयनिष्ठता की पहचान करने एवं पोषित करने की जरुरत है। इसी प्रकार अन्य सामाजिक-सांस्कृतिक पर्यावरणों के व्यक्तियों के मध्य मूल्यों में वस्तुनिष्ठ उभयनिष्ठता की पहचान करने एवं पोषित करने की जरुरत है। मूल्य नैतिकता के साथ मिलकर हमें क्या सही है और क्या गलत है का निर्णय लेने में भूमिका निभाते हैं। निर्णय लेते समय मूल्यों एवं नैतिकता को आधार बनाने की आदत को विकसित करने की जरुरत है। सांस्कृतिक विरासत को संरक्षित करना, सांस्कृतिक विविधता और पारंपरिक ज्ञान को बढ़ावा देना भी आज कि जरूरत है।

सामाजिक-सांस्कृतिक व्यवहार की इकाई को सांस्कृतिक गुण (cultural trait) कहते है। यह हमारे व्यवहार की सबसे छोटी इकाई होती है। जैसे- हाथ जोड़ना, नमस्ते बोलना। व्यवहार कि यह छोटी-छोटी इकाइयां मिलकर सांस्कृतिक संकुल (cultural complex) का निर्माण करती हैं। यह एक कार्यात्मक इकाई है। जैसे- हाथ जोड़कर नमस्ते करना। शिक्षा, संस्कृति का भाग है जिसमें शिक्षण कार्य एक कार्यात्मक इकाई है। इसलिए 'शिक्षण' एक संकुल है जिसके अंतर्गत

शिक्षक, छात्र, पाठ्यक्रम, शिक्षण विधि और शिक्षण उद्देश्य के परस्पर संबंध आता है, इससे एक संपूर्ण प्रणाली बनती है जो शिक्षण प्रक्रिया की गहरी समझ देती है।

स्वस्थ सामाजिक-सांस्कृतिक पर्यावरण की विशेषताएँ

समान अवसर, न्याय, सहिष्णुता, भाईचारा, और सामाजिक एकजुटता, जहाँ सभी सदस्य सुरक्षित, सम्मानजनक और खुशहाल जीवन जी सकें ऐसे समाज को एक अच्छा समाज कहा जा सकता है। इन विशेषताओं से युक्त सामाजिक पर्यावरण को बनाने की जरुरत है।

सभी लोगों के लिए समान अधिकार और अवसर होने चाहिए, चाहे उनका धर्म, जाति, लिंग या सामाजिक स्थिति कुछ भी हो। समाज में विभिन्न धर्मों, संस्कृतियों और विचार वाले लोगों के बीच सहिष्णुता और सम्मान होना चाहिए। लोगों के बीच भाईचारा और सहयोग की भावना होनी चाहिए, ताकि वे एक-दूसरे की मदद कर सकें और एक साथ मिलकर काम कर सकें। समाज के सभी सदस्य एक-दूसरे से जुड़े और एक-दूसरे की जिम्मेदारी महसूस करें। पर्यावरण, शिक्षा और ज्ञान को बढ़ावा देने वाले हों, ताकि लोग अपने जीवन को बेहतर बना सकें और समाज के विकास में योगदान कर सकें। लोगों को अपनी बात कहने और अपने विचारों को व्यक्त करने की स्वतंत्रता हो, और समाज में लोकतांत्रिक व्यवहार हो। पर्यावरण की रक्षा के लिए प्रयास हो, ताकि आने वाली पीढ़ियों के लिए एक बेहतर दुनिया का निर्माण हो। समाज में आर्थिक विकास हो, ताकि सभी लोगों की आर्थिक स्थिति में सुधार हो। सभी लोगों के लिए स्वास्थ्य और कल्याण की सुविधाएँ उपलब्ध हो। समाज में कानून और व्यवस्था हो, ताकि लोग सुरक्षित रह सकें और अपराध न हो।

21वीं सदी के सामाजिक-सांस्कृतिक पर्यावरण में समाज को ज्ञान आधारित होना चाहिए जहां ज्ञान को उत्पादन का सबसे महत्त्वपूर्ण कारक माना जाता है, जहां ज्ञान का सृजन, प्रसार और उपयोग समाज के विकास के लिए महत्वपूर्ण होता है।

स्वस्थ सामाजिक-सांस्कृतिक पर्यावरण के मानक के रूप में संवैधानिक मूल्य

भारतीय संविधान में अंतर्निहित मूल्य सामाजिक-सांस्कृतिक पर्यावरण के मानक हैं। संप्रभुता, समाजवाद, धर्मनिरपेक्षता, लोकतंत्र, न्याय, स्वतंत्रता, समानता, बंधुत्व और राष्ट्र की एकता व अखंडता भारतीय संविधान के प्रमुख मूल्य हैं।

सामाजिक-सांस्कृतिक पर्यावरण भारत देश को एक स्वतंत्र और स्वायत्त राष्ट्र के रूप में स्थापित करने वाला होना चाहिए। देश को आंतरिक और बाहरी मामलों में निर्णय लेने में सक्षम बनाने वाला होना चाहिए। समाज में आर्थिक और सामाजिक समानता एवं समता स्थापित करने में सहायक होना चाहिए। सभी नागरिकों को समान अवसर देने, सभी धर्मों को समान रूप से सम्मान देने एवं राज्य किसी भी धर्म को विशेष रूप से समर्थन नहीं करने वाला होना चाहिए। सामाजिक-सांस्कृतिक पर्यावरण, जनता को शासन में भागीदारी के अधिकार को सुनिश्चित करने वाला तथा सरकार का चुनाव जनता के द्वारा ही हो इसे सुनिश्चित करने वाला होना चाहिए। सामाजिक, आर्थिक और राजनीतिक न्याय सुनिश्चित करना, सभी नागरिकों को समान अवसर मिले इसे सुनिश्चित करना, विचार, अभिव्यक्ति एवं विश्वास की स्वतंत्रता सुनिश्चित करना इसका उद्देश्य होना चाहिए। सभी नागरिकों को कानून के समक्ष समान मानने, किसी भी प्रकार का भेदभाव नहीं करने, सभी नागरिकों के बीच भाईचारा और एकता को बढ़ावा देने वाला होना चाहिए। देश को एकजुट रखने, उसे अखंड बनाए रखने, हर व्यक्ति को सम्मान और गरिमा के साथ जीने के अधिकार सुनिश्चित करने वाला होना चाहिए। सभी नागरिक कानून के अधीन रहें और कोई भी व्यक्ति कानून से ऊपर नहीं है इस विश्वास को बढ़ाने वाला होना चाहिए। न्यायपालिका की स्वतंत्रता और निष्पक्षता की स्वतंत्रता को पोषित करने वाला होना चाहिए।

सामाजिक-सांस्कृतिक मूल्यों के प्रतिस्थान द्वारा सामाजिक-सांस्कृतिक प्रदूषण का निवारण

समाज ने व्यक्ति के जीवन को सबल बनाया किन्तु उन्हें दुर्बल बनाने के लिए भी यही समाज जिम्मेदार है। दुर्बलता का प्रभाव हमारे विश्वास एवं सोच पर पड़ा है। हमारे विश्वास एवं चिंतन के दूषित होने का परिणाम ही पर्यावरण प्रदूषण है। एक कहावत है कि हम जैसा सोचते हैं, वैसा बन जाते है। इस कहावत के आगे यह भी जोड़ने की जरूरत है कि हम जैसा सोचते हैं, वैसा ही पर्यावरण का सृजन करते हैं। स्वस्थ पर्यावरण निर्माण के लिए अच्छी सोच का निर्माण होना जरूरी है। उचित शिक्षा के माध्यम से प्रगतिशील सोच का निर्माण किया जा सकता है। सोच में बदलाव मूल्य प्रतिस्थापन से होता है। मूल्य प्रतिस्थापन करने के लिए हमें सप्रयास विश्वास का प्रतिस्थापन करना होगा।

सामाजिक-सांस्कृतिक प्रदूषण का निवारण सामाजिक-सांस्कृतिक पर्यावरण के संरक्षण और प्रदूषण को रोकने के लिए नीतिगत उपायों, सामाजिक सहभागिता और शिक्षा प्रणाली

में सुधार करके किया जा सकता है। शिक्षा के प्रत्येक स्तर एवं प्रत्येक विषय में मूल्य एवं नैतिकता को स्थान देकर सामाजिक-सांस्कृतिक पर्यावरणीय प्रदूषण का निवारण किया जा सकता है। सामाजिक-सांस्कृतिक मूल्यों का प्रतिस्थापन कैसे करेंगे? यह विश्वास के प्रतिस्थापन से ही संभव है। एक प्रस्तावित समाधान यहाँ दिया गया है।

विश्वास के प्रतिस्थापन के दो तरीके हैं, एक स्वचालित और दूसरा प्रयासपूर्ण।

विश्वास का स्वचालित प्रतिस्थापन

विश्वास में परिवर्तन के लिए समय एक निर्णायक कारक है। विभिन्न आयु चरण और प्राकृतिक वृद्धावस्था विश्वास को प्रभावित करते हैं, जो व्यक्ति की उम्र बढ़ने के साथ अधिक रूढ़िवादी हो सकते हैं। इसी प्रकार, जिस समाज में व्यक्ति रहता है उसका भी उसके विश्वास के परिवर्तन पर प्रभाव पड़ता है।

आधुनिक समाज का सामाजिक-आर्थिक विकास और प्रौद्योगिकी का तीव्र विकास समाज द्वारा अपनाई जाने वाली विश्वास प्रणाली को प्रभावित करता है। साथ ही, किसी क्षेत्र की आर्थिक स्थिरता और समृद्धि, उस क्षेत्र की राजनीतिक स्थिरता और धर्म का भी सामाजिक-सांस्कृतिक विश्वास पर प्रभाव पड़ता है। विश्वास भौगोलिक स्थिति के अनुसार भी बदलते रहते हैं।

विश्वास का सप्रयास प्रतिस्थापन

विश्वास का सप्रयास प्रतिस्थापन के लिए सबसे पहले अपनी संकीर्ण मान्यताओं को पहचानें, उन्हें तार्किक रूप से चुनौती दें, सकारात्मक पुष्टि अपनाएं और नए, सहायक विश्वासों के अनुरूप कार्य करें। स्वयं पर भरोसा बढ़ाने के लिए छोटे यथार्थवादी लक्ष्य बनाएं सकारात्मक माहौल का निर्माण करें और बार-बार अभ्यास करें, इसमें धैर्य और निरंतरता आवश्यक होती है।

विश्वास प्रतिस्थापन के प्रमुख सोपान

विश्वास प्रतिस्थापन एक क्रमिक प्रक्रिया है। इसे निम्नलिखित सोपानों के अंतर्गत रखकर निरंतर प्रयास से प्रतिस्थापित किया जा सकता है।

1. संकीर्ण विश्वासों की पहचान

उन नकारात्मक संकीर्ण विश्वासों को लिखें जो आपको आगे बढ़ने से रोकते हैं, उनका विश्लेषण करें क्या वे वास्तव में सही हैं।

2. विश्वास से जुड़े तथ्यों की तार्किक जाँच करें

अपने पुराने विश्वासों को चुनौती दें। स्वयं से पूछें कि क्या यह विश्वास तर्कसंगत है? क्या किसी दूसरे व्यक्ति के लिए भी यही नियम लागू होगा? खुद से पूछें, "क्या यह सचमुच सच है?" और इसके खिलाफ सबूत खोजें। अक्सर ये विश्वास केवल भावनाएं होते हैं, ठोस तथ्य नहीं। इन विश्वासों को नए और सकारात्मक विश्वास से प्रतिस्थापित करें।

3. नए विश्वासों की तार्किक जांच करें और उन्हें परिभाषित करें

अपने नए विश्वासों के जांच के लिए सकारात्मक पुष्टीकरण का उपयोग करें। यह कल्पना करें कि मैं इस नए, अधिक प्रभावी विश्वास के साथ जीवन जीता तो मेरा जीवन कैसा होता? पुराने नकारात्मक विचार के विपरीत एक सकारात्मक और यथार्थवादी विश्वास चुनें। उदाहरण के लिए "मैं अक्षम हूँ" के बजाय "मैं सीख सकता हूँ और सुधार कर सकता हूँ"।

4. नए विश्वासों से जुड़े सबूत जुटाएं और स्वयं पर भरोसा बढ़ाएं

अपना ध्यान खूबियों पर केंद्रित करें, न कि दूसरों से तुलना करने पर। विश्वास का अभ्यास करें। जब हम छोटे कार्यों में सफल होते हैं, तो हमारा मस्तिष्क नए विश्वास को स्वीकार करना शुरू कर देता है।

5. नए विश्वासों के लिए सकारात्मक वातावरण का निर्माण करें एवं आदतों में बदलाव करें

ऐसे लोगों के साथ समय बिताएं जो आपको प्रेरित करते हैं, जो चयनित नए विश्वास के साथ जी रहे हैं, जो नए विश्वास के लिए आपका समर्थन करते हैं। नकारात्मक लोगों से दूरी बनाएं। स्वस्थ आदतें अपनाएं और नए विश्वास का समर्थन करने वाली नई दक्षताएं एवं कौशल सीखें।

6. नए विश्वास के लिए मानसिक रूप से स्थिर बने रहें

जिस विश्वास के साथ आप अभ्यास कर रहे हैं, शुरुआत में वह बुरी या दुखद लग सकती है। अपने भावनाओं पर नियंत्रण रखें। आरंभ में दुखद स्थिति हो सकती है, इसे स्वीकार करें। नए विश्वास की गहराई में जाएं और वफादार बने रहें। अभ्यास के दौरान पुराने विश्वास आएंगे, उन्हें रोकें और अपना ध्यान नए विश्वास पर केंद्रित करें।

सामाजिक-सांस्कृतिक प्रदूषण का निवारण करने के लिए यहाँ कुछ सामाजिक-सांस्कृतिक मूल्यों को दिया गया है-

अहिंसा - अकारण किसी भी जीव को मानसिक या शारीरिक हानि न पहुँचाना हमारा संकल्प होना चाहिए। भौतिक सुखों के लिए जब हम सहअस्तित्व के लिए आवश्यक जीवों को क्षति पहुंचाते हैं तो हम प्रदूषक के रूप में कार्य करने लगते हैं। मन, वचन एवं कर्म से हमें अहिंसा का पालन करना चाहिए।

सत्य - एक अच्छे समाज के लिए सच्चाई का पालन करना और सत्यनिष्ठा बनाए रखना हमारी नैतिक जिम्मेदारी है। जो हमारे मन अर्थात विचार में है तथा जो हमने कर्म किया है वही वाणी के माध्यम से प्रकट होना चाहिए।

अतिथि सत्कार - वैश्विक बंधुता को स्थापित करने के लिए अतिथि सत्कार को अपनाने की आवश्यकता है।

सम्मान - समाज में अपने से वयस्क व्यक्तियों एवं बुजुर्गों को सम्मान देने, उनकी आज्ञा मानने और उनके अनुभव का आदर करने के साथ-साथ उम्र में छोटे व्यक्तियों को भी सम्मान देना चाहिए।

संयुक्त परिवार - एकल परिवार आज प्रचलन में है। इसकी सीमाएं हैं, संयुक्त परिवार को समाज की आधारशिला मानना और पारिवारिक एकता बनाए रखने का प्रयास करना चाहिए।

परोपकार - दूसरों की भलाई के लिए कार्य करने कि आदत को ढालना चाहिए। दूसरों की मदद करके हमें समाज के प्रति अपने कर्तव्यों का निर्वहन करना चाहिए।

समानता एवं समता - हमें अपनी नीतियों एवं गतिविधियों में सभी व्यक्तियों को समान अधिकार और अवसर देना सुनिश्चित करना चाहिए। समता के लिए समाज के कुछ लोगों के लिए विशेष व्यवस्था करना हो तो उसे भी करना चाहिए। जैसे - सकारात्मक कार्रवाई (affirmative action), आरक्षण आदि।

स्वतंत्रता - हमें प्रत्येक व्यक्ति के स्वतंत्र चिंतन का सम्मान करना चाहिए। सबके लिए विचार, अभिव्यक्ति, विश्वास की स्वतंत्रता सुनिश्चित करना हमारा उद्देश्य होना चाहिए।

समयनिष्ठा - समय की पाबंदी प्रत्येक कार्य को अनुशासित तरीके से सम्पन्न होने की सकारात्मकता को बढ़ाती है। इसलिए हमें नित्यक्रिया से लेकर सभी कार्य निर्धारित समय पर पूर्ण करना चाहिए।

विनम्रता - अपनी उपलब्धियों का प्रदर्शन न करना और दूसरों का आभार मानना एक ऐसा मूल्य है जिसे प्रत्येक व्यक्ति को अपनाना चाहिए।

सहिष्णुता - विभिन्न धर्मों, विश्वासों और संस्कृतियों के प्रति सम्मान और स्वीकार्यता का भाव हमें रखना चाहिए।

ईमानदारी - आपसी व्यवहार में पारदर्शिता और सच्चाई बनाए रखना आज बेहद जरूरी है। यह सामुदायिक विश्वास की नींव होती है। इससे सामाजिक साख बनी रहती है।

सामाजिक सद्भाव - सामाजिक सद्भाव का आधार हमारी अंत:क्रिया होती है। अंत:क्रिया में मन, वचन एवं कर्म सम्मिलित हैं। इस पर संयम रखकर हमें सद्भाव को बनाए रखने का अभ्यास करना चाहिए।

सामुदायिक एकता - समुदाय में एकता स्थापन के लिए उभयनिष्ठ आवश्यकताओं को पूरा करने वाली गतिविधियां सामूहिक रूप से सम्पन्न होनी चाहिए। सबका योगदान एवं सहभागिता सुनिश्चित होनी चाहिए।

सहयोग - मन, वचन एवं कर्म से छोटा या बड़ा सामर्थ्य के अनुसार निस्वार्थ भाव से एक-दूसरे का सहयोग करना चाहिए।

अपरिग्रह और संयम - आवश्यकता से अधिक संग्रह न करना और इंद्रिय संयम हमें अच्छे सामाजिक पर्यावरण बनाने में मदद करते हैं।

सहानुभूति - आंतरिक एवं बाहरी दबावों से टूट रहे व्यक्तियों को सहानुभूति से बचाया जा सकता है। सहानुभूति उद्वेलित मन को शांत कर स्थिरता लाने में मदद करता है।

दया - दया अपनी मानसिक पीड़ा को कम करने के साथ-साथ दूसरे के शारीरिक एवं मानसिक पीड़ा को दूर करने की सबसे कारगर दवाई है। मनुष्य सहित जीवों एवं वनस्पतियों पर दया करके सामाजिक वातावरण को बेहतर किया जाना चाहिए।

न्याय और निष्पक्षता - समाज के सभी वर्गों के लिए समान अवसर और कानूनी अधिकार सुनिश्चित करना सामाजिक संस्थाओं का उद्देश्य होना चाहिए। सभी नागरिक कानून के अधीन रहें और कोई भी व्यक्ति कानून से ऊपर नहीं है इस विश्वास का पोषण होना चाहिए।

सेवा - परिवार से आरंभ करके समाज के प्रति अपने कर्तव्यों का निर्वहन करना ही सेवा है। सेवा से पर पीड़ा दूर होती है एवं आत्मसंतोष मिलता है। इससे सामाजिक बंधन के बुनियाद को मजबूती मिलती है।

शांति - सामाजिक-सांस्कृतिक पर्यावरण का मूल केन्द्रबिन्दु शांति है। आंतरिक एवं बाह्य पर्यावरण से अशांत घटकों को चुन-चुन कर दूर करने एवं मन पर नियंत्रण रखने से शांति अपने आप आती है।

प्रेम - प्रेम हमारा भावनात्मक जुड़ाव है। इसमें वासना को आने से रोककर तथा दूसरे के लिए त्याग व समर्पण को आधार देकर पर्यावरण को आनंदमय बनाया जा सकता है।

एकता एवं अखंडता - हमारा व्यवहार सभी नागरिकों के बीच भाईचारा और एकता को बढ़ावा देने वाला होना चाहिए। देश को एकजुट रखने तथा उसे अखंड बनाए रखने के लिए संस्कृति को जोड़ने वाले सांस्कृतिक गुणों एवं संकुलों का संवर्धन करना चाहिए।

लोकतंत्र - देश की शासन व्यवस्था, नागरिकों की भागीदारी के अधिकार को सुनिश्चित करने वाला तथा सरकार का चुनाव जनता के द्वारा ही हो इसे सुनिश्चित करने वाला होना चाहिए।

संप्रभुता - वैश्विक सामाजिक-सांस्कृतिक पर्यावरण प्रत्येक देश को एक स्वतंत्र और स्वायत्त राष्ट्र के रूप में स्थापित करने वाला होना चाहिए। प्रत्येक देश को अपने आंतरिक और बाहरी मामलों में निर्णय लेने में सक्षम होना चाहिए।

समाजवाद - उत्पादन के साधनों पर निजी स्वामित्व के बजाय सामाजिक या सरकारी नियंत्रण होना चाहिए। संसाधनों के समान वितरण, वर्गहीन समाज की स्थापना और सामूहिक कल्याण सुनिश्चित करने के लिए समाजवाद जरूरी है।

धर्मनिरपेक्षता - सभी धर्मों को समान रूप से सम्मान देने एवं राज्य किसी भी धर्म को विशेष रूप से समर्थन नहीं करने वाला होना चाहिए।

निष्कर्ष

सामाजिक-सांस्कृतिक प्रदूषण हमें दिखाई नहीं देता है, लेकिन इसके प्रभाव भौतिक प्रदूषण से भी अधिक विनाशकारी होते हैं। नाजीवाद को उदाहरण के रूप में देखा जा सकता है। समाज के मानसिक और नैतिक धरातल के स्वस्थ होने पर ही एक स्वस्थ राष्ट्र की कल्पना की जा सकती है। हमें सामूहिक रूप से अपनी जिम्मेदारी का निर्वहन करके अर्थात स्वस्थ विश्वासों के साथ जीवन जीकर अपने सामाजिक-सांस्कृतिक पर्यावरण को स्वस्थ बनाने में योगदान देना चाहिए और आधुनिकता के साथ संतुलन स्थापित करना चाहिए। हम विश्वास के प्रतिस्थापन एवं संवर्धन करके, आत्म-संयम और जागरूकता के साथ संवैधानिक मूल्यों तथा नैतिकता को जीवनशैली का हिस्सा बनाकर सामाजिक-सांस्कृतिक प्रदूषण का निवारण कर सकते हैं।

संदर्भ ग्रंथ सूची

नीलम, जायसवाल, पूनम, व मानस, सरोजबाला (2008). स्नातक स्तर के विद्यार्थियों के पर्यावरणीय आचरण का अध्ययन. *समाज एवं पर्यावरणीय आचार*, एस.एम.पी.एफ. पब्लिशर्स, 222-238.

जोसुआ, डी., व फेंग, एच. (2025). एनवायरमेंटल पेसिमिज़म डिमिनिशेज सोशल ट्रस्ट एण्ड कन्सर्न इन प्रिडिक्टिन्ग विलिंगनेस टू सक्रिफ़ाइज फॉर एनवायरमेंटल प्रोटेक्शन्स. *जर्नल ऑफ़ एनवायरनमेंटल स्टडीज़ एंड साइंसेज़,* 16, 62-72. https://link.springer.com/article/10.1007/s13412-025-01015-6

यादव, राजेश, (2021). पर्यावरणीय प्रदूषण एवं मानवीय स्वास्थ्य-भारतीय संस्कृति के विशेष संदर्भ में. *इंटरनेशनल जर्नल ऑफ ह्यूमैनिटीज़ एण्ड सोशल साइंस रिसर्च,* 7(3), 34-38. www.socialsciencejournal.in

रा. शै. अनु. एवं प्र. प., (2026). पर्यावरण और समाज. कक्षा 11वीं की पाठ्यपुस्तक, अध्याय 3. *समाजशास्त्र*, 51-67. https://ncert.nic.in/textbook/pdf/khsy203.pdf

गुरूपंच, कुबेर सिंह, (2022). पर्यावरण प्रदूषण एवं नैतिकता का भौगोलिक अध्ययन. *इंटरनेशनल जर्नल ऑफ एडवांस इन सोशल साइंसेज,* 10(1), 31-34. *https://ijassonline.in/*

अग्रवाल, विमलेश, (2025). सांस्कृतिक पर्यावरण के संरक्षण एवं प्रदूषण का समाजशास्त्रीय अध्ययन. *श्रृंखला एक शोधपरक वैचारिक पत्रिका,* XII, VI. https://socialresearchfoundation.com/

जियोवानोपोलू, ज़िउवेलू, पेटैसिस, कार्कालेट्सिस, (2023). एक्सपलोरींग वैल्यूस एण्ड वैल्यू ट्रांसफॉरमेशन : ए मल्टी-पर्सपेक्टिव अप्रोच. ओपन जर्नल ऑफ सोशल साइंसेज, 11 (3). https://www.scirp.org/journal/paperinformation?paperid=123983

0% Overall Similarity

NO MATCHES FOUND

This submission did not match any of the content we compared it against.